प्रो. हरिशंकर 'आदेश' के कहानी साहित्य में चित्रित नारी संवेदना

Sumit*

M.A. in Hindi (UGC Net)

शोध सार – ***प्रो. हरिशंकर आदेश का जन्म भारत में हुआ, किन्तु उनकी कर्मस्थली ट्रिनीडाड, कनाडा और अमेरिका है। ये चार दशक से अधिक समय से भारतीय संस्कृति, भारतीय संगीत और हिन्दी के प्रचार में लगे हैं। भारतीय विद्या संस्थान के माध्यम से विदेश में भारतीय संगीत, भारतीय संस्कृति और हिन्दी का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। प्रो. 'आदेश' जी की लेखनी से हिन्दी की लगभग डेढ़ सौ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। प्रो. 'आदेश' हिन्दी साहित्य और भारतीय संगीत के लिए कई बार पुरस्कृत हो चुके हैं। श्रेष्ठ प्रवासी हिन्दी साहित्यकार के रूप में भारत के राष्ट्रपति ने प्रो. 'आदेश' को पुरस्कृत और सम्मानित किया है।***

मुख्य-शब्द: शिक्षा, अंग्रेज, इसाई धर्म, कंपनी, परंपरागत भारतीय विद्या।

---------------------------------x---------------------------------

समाज की लघुत्तम इकाई व्यक्ति है, क्योंकि व्यक्ति-व्यक्ति मिलकर समाज की संरचना होती है। एक व्यक्ति समाज में विविध लोगों से विविध संबंधों से जुड़ता है। एक व्यक्ति किसी का भाई हो सकता है, तो दूसरे का पुत्र हो सकता है। वही व्यक्ति एक व्यक्ति का चाचा होगा तो दूसरे का मामा हो सकता है। इस प्रकार एक व्यक्ति समाज के विभिन्न लोगों से विविध सम्बन्धों से जुड़कर जीवन में गतिशील रहता है।

समाज की गतिशीलता में नर और नारी की संयुक्त और महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। कहा जाता है नर और नारी समाज रूपी रथ के दो पहिये हैं। इनकी सहगतिशीलता पर समाज की गतिशीलता निर्भर है। इनमें से किसी एक की गति शिथिल होने या गति रुक जाने पर विषम परिस्थिति का आना सुनिश्चित हो जाएगा।

नारी को श्रद्धा, दया, ममता और सहिष्णुता की देवी के रूप में पूज्य माना गया है। इसी महत्त्व को देखते हुए अपने देश की धरती को सम्मान से मातृभूमि की संज्ञा दी गई है। कुछ विद्वानों का कहना है कि 'नर' के दोनों वर्ण 'न' और 'र' ह्रस्व हैं जबकि 'नारी' में दोनों वर्ण (अक्षर) 'ना' और 'री' दीर्घ हैं। इस प्रकार समाज में नारी का परम महत्व और उसके नाम की सार्थकता स्पष्ट होती है।

नारी शब्द की व्युत्पत्ति 'नृ $ अञ् -ङीव्' से की गई है। 'संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुम' में नारी को निम्नलिखित अर्थों में प्रयोग किया गया है - स्त्री, औरत।1

"संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर में भी नारी के लिए स्त्री और औरत दो शब्दार्थ दिये गये हैं।"2

डॉ. रामचन्द्र वर्मा ने नारी के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए मानक हिन्दी कोश में अपना विचार इस प्रकार व्यक्त किया है, "विशेषतः वह स्त्री जिसमें लज्जा, सेवा, श्रद्धा, त्याग, आदि गुणों की प्रधानता हो नारी है।3

माना युग-परिवर्तन से नारी को अधिकार मिला है, नारी शिक्षित होकर प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर रही है, किन्तु समाज की विकृत मानसिकता में भ्रूण-हत्या, दहेज, बाल-विवाह, नारी पर हो रहे अत्याचार, अनाचार और व्यभिचार मन-मस्तिष्क को हिला देने वाले हैं। सबसे चिन्ता का विषय उस सामने आता है जब नार पुरुष के साथ मिलकर स्वार्थ लोलुपता या वासना में नारी-नारी का जीवन दुर्लभ कर देती है।

प्रो. हरिशंकर 'आदेश' बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार हैं। इनकी लेखनी से कई कहानी संग्रह और 'नीति-भक्ति कथा संग्रह' प्रकाशित हो चुके हैं। प्रो 'आदेश' की लेखनी बीसवीं शताब्दी के मध्य से प्रारंभ होकर इक्कीसवीं शताब्दी में

www.ignited.in

गतिशील हैं। इस प्रकार यह भी आशा की जाती है कि इनकी कहानियां में यत्र-तत्र आधुनिकता का रंग अवश्य होगा।

प्रो. 'आदेश' की कहानियों में नारी की सम्बंधगत संवेदना

नारी स्वभाव से कोमलांगी और मधुर-सहज भावों की अधिष्ठात्री है। नारी के बिना सृष्टि असंभव है। इसी प्रकार कहानी संसार में उनका सहज अस्तित्व भी अनिवार्य है।

क) नारी: मातृ रूप

भारतीय परिवेश में नारी को विशेष महत्त्व दिया जाता है। नारी के विविध रूपों में मातृ या माँ रूप को सर्वाधिक महत्त्व दिया जाता है। इसका मुख्य कारण है कि माँ सन्तान को जन्म देती है। बच्चे के जन्म के पश्चात् उसके लालन-पान का मुख्य भार माँ पर ही होता है। माँ बच्चे को स्वस्थ-प्रसन्न रखने के लिए विविध योजनाओं को सम्पन्न करती है। वह अपना सुख-दुःख भूलकर उसके लिए सुख परिवेश का निर्माण करती है।

ख) नारी: पत्नी रूप

भारतीय मान्यता में गृहस्थ धर्म को सर्वोत्तम धर्म के रूप में स्वीकृति मिली है। सृष्टि के संचालन और गतिशीलता में पति-पत्नी को दो गत एक प्राण के रूप में माना गया है। भारतीय सोलह संस्कारों में बालक-बालिका से वर-वधू और वर-वधू से पति-पत्नी की मान्यता प्रदान करने वाले विवाह संस्कार का सर्वाधिक महत्त्व है। भारतीय संस्कृति में विवाह बंधन के बाद पति-पत्नी को जीवन भर सुख-दुःख में साथ रहने की मान्यता है। कुछ का यह भी कहना है कि पति-पत्नी का संबंध जन्म-जन्मान्तर का होता है। वर्तमान समय में ये मान्यताएँ शिथिल होती चली आ रही हैं।

ग) नारी: प्रेमिका रूप

प्रेम संसार को सरस बनाकर गतिशील रखने का मुख्य आधार है। प्रेम के विविध रूपों में वर्तमान समय में प्रेमिका का रंग विशेष विस्तार पा गया है। पूर्व काल में लड़का और लड़की या नर-नारी के प्रणय बंधन के पश्चात् प्रेम-भाव का विस्तार होता था। कभी-कभी यह भी देखा गया है कि प्रथम प्रेम ही गहराता हुआ वैवाहिक रूप में बदल कर दाम्पत्य जीवन व्यतीत करते रहे हैं। यह भी निर्विवाद तथ्य है कभी भी पूर्ण सत्य या आदर्श का साम्राज्य नहीं रहा है। आधुनिक युग में सहज-स्वाभाविक प्रेम के स्थान पर विषय, विपरीत या निम्न प्रेम का विस्तार होता जा रहा है। प्रेम पर लोभ, द्वेष और वासना का उभरता रंग उसे विकृत करता जा रहा है। वर्तमान समय में एक पक्षीय प्रेम बालिकाओं और महिलाओं के लिए मुसीबत बन कर सामने आ रहे हैं। पूर्व समय में 'प्रेमिका' शब्द पूर्ण सम्मान से लिया जाता था, क्योंकि दोनों पक्षों के प्रेम में सामाजिक रंग, मान्यताओं को सम्मान, पारिवारिक सहजता और जीवन जीने का सहज मार्ग दिखाई देता था। प्रेम की विकृतियों ने आज 'प्रेमिका' शब्द को अर्थापकर्ष वर्ग में लाकर रख दिया।

प्रो. 'आदेश' की कहानियों में चित्रित नारी का प्रवृत्तिगत संवेदना

समाज में प्रत्येक व्यक्ति का रूप रंग ही नहीं चिन्तन और व्यवहार भिन्न-भिन्न होता है। व्यक्तिगत या विशेषताएं ही मनुष्य की अपनी पहचान होती है। मात्र किनारी निश्चय ही पुरुष की अपेक्षा कोमलांगी, विनम्र, सहनशील और सहिष्णु होती है। प्रो. 'आदेश' की कहानियों में धार्मिक और चंचला आदि प्रवृत्तियों की नारियों की गतिविधियाँ का चित्रांकन किया गया है। इस विवेचन से उनकी प्रवृत्तियों का सहज अभिव्यक्ति संभव है।

स्वाभिमानी नारी

विधाता की सृष्टि में नारी को बाह्य ही नहीं आन्तरिक सौन्दर्य के लिए सम्मान दिया जाता है। कोमलांगी होने के साथ विनम्रता, लज्जा, सहनशीलता और माधुर्य उसकी अपनी विशेषताएं हैं। कुछ नारियों में स्वभावतः अपने सौन्दर्य पर गर्व होता है। समाज महत्त्व दे या न दे, तो कुछ नारियों के सौन्दर्य का अभिनन्दन सराहना और चर्चा समाज या उनके प्रिय पात्रों द्वारा की जाती है।

"कुछ मत कहो तुलसी ! मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूँ। मान जाओ। जिस दिन से तुम्हें देखा है, मैं अपनी सुध-बुध भूल बैठा हूँ।"

"मैं कितनी बार कह चुकी हूँ, मेरे साथ ऐसी गंदी बातें मत किया करो। मैं सख्ती, आवारा और दुश्चरित्र लड़की नहीं हूँ।"4

रूपगर्विता नारी

नारी सौन्दर्य समाज और साहित्य की अनुपम धरोहर है। नारी-सौन्दर्य के प्रभाव में परिवेश बदल जाता है। परिवेश-परिवर्तन पर जन-मन में परिवर्तन होना भी स्वाभाविक है। प्रो. 'आदेश' की कहानिों में रूपगर्विता नारी का चित्रण बहुविधि किया गया है। 'वन्दना' कहानी में वन्दना ने विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया है। उसके रूप की चकाचैंध में छात्र ही नहीं शिक्षक भी आ

www.ignited.in

गये हैं। बहुत सारे छात्र उसे प्रभावित करने के लिए सज-धज कर आने लगे हैं। शिक्षक तक में हुआ आकर्षण और परिवर्तन अवलोकनीय बन गया।

प्रस्तुत विवेचन से सुस्पष्ट होता है कि प्रो. 'आदेश' की कहानियों की अनुकूल शिल्प-योजना में विभिन्न संवेदनाओं को प्रभावी, मनोहारी और प्रेरक अभिव्यक्ति मिली है। इनकी आदर्शोन्मुखी कहानियों में आधुनिक वातायन का प्रभाव भी यत्र-तत्र स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इनकी बोध कहानियों में उद्बोधन की अनूठी शक्ति सम्पन्नता है।

सन्दर्भ सूची

1. चतुर्वेदी, द्वारका प्रसाद शर्मा, पं. तारिणीश झा, संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुम, पृ. 579
2. डॉ. रामचन्द्र वर्मा, संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर, पृ. 543
3. डॉ. रामचन्द्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश (तीसरा भाग), पृ. 250
4. प्रो. हरिशंकर 'आदेश', निशा की बाहें (कुहासा), पृ. 1
5. चतुर्वेदी, द्वारका प्रसाद शर्मा, पं. तारिणीश झा, संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुम, पृ. 579
6. डॉ. रामचन्द्र वर्मा, संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर, पृ. 543
7. डॉ.रामचन्द्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश (तीसरा भाग), पृ. 250
8. प्रो. हरिशंकर 'आदेश', निशा की बाहें (कुहासा), पृ. 1

Corresponding Author

Sumit*

M.A. in Hindi (UGC Net)

mrs.sumit88@gmail.com